संक्षिप्त भावार्थ_दासबोधामृत : अध्याय ६ : " भीम तथा विवेक_वैराग्य "

ॐ अथ श्रीसमर्थ_रामदास विरचित दासबोध ग्रन्थात् मथित "सन्क्षिप्त भावार्थ_दासबोधामृत"सारे

" भीम तथा विवेक_वैराग्य " नाम षष्ठोऽध्याय:

(मूळ दासबोध दशक ११ : " भीम ")

ॐ श्री गणेशाय नम: |

श्रीराम जय राम जय जय राम | जय जय रघुवीर समर्थ !

श्रोत्रस्य श्रोत्रम् मनसो मनो यत् | वाचो ह वाचम् य उ प्राणस्य प्राण: (६.१)

चक्षुष: चक्षु: अतिमुच्य धीरा: | प्रेत्यास्मात् लोकात् अमृता भवन्ति (६.२)

स्व_शरीरातील कर्ण व चक्षु | यांचा उपयोग करणारी जी 'वस्तु' | ऐकते, पाहते, लागते नाचू | वाचते बोलते व गातेही गाणी (६.३)

मर्त्य अशा सर्व सजीव शरीरी | अजरामर अशी एक वसते ही शक्ती | ऐसा हा '**सिद्धान्त**' केनोपनिषदी | वर्णिला असे सविस्तर (६.४)

रसनेमधून जाणते तीच, रुची षड्-रसांची | घ्राणा मधून घेतसे 'वास' ती गन्धांची | कर्मेन्द्रियांकडुन करविते कर्मे ती | स्वेच्छेनुसार जे जे हवे_तिजसि, ते ते (६.५) [११.१.२७_३०]

आत्मा, जीवात्मा, अन्तरात्मा | ऐशी नावे त्या शक्तीस नाना | तीच असे साक्षी, अन्तरसाक्षी, द्रष्टा | सुख_दु:ख भोक्ता तीच **जाणीव_शक्ती** (६.६)

निर्गुणी 'अनन्य' भावैक्यता | सातत्ये सर्वावस्थेत गाठता | सायुज्य मुक्ती वा जीवन्मुक्तता | पायरी गाठली असे जाणावे (६.७) [११.१.४४_४४]

सूर्य, चन्द्र, तारे व पञ्च महाभूते | भूमी, सागर, नद्या, सरोवरे, डोङ्गरे | वृक्ष, लता, झाडे, झुडूपे, शेवाळे | दैवी शक्ती तर वसे, या सर्वाठायीही (६.८)

गोमाता, वृषभ, सिंह, मयुर, नाग | हत्ती, मकर, हंस, गरुड, मूषकादिक | सर्वाठायीञ्चे अन्तर्यामी दैवत्व भजत | माजले बंडच या स्थूल_दैवतांचे (६.९) [११.२.२०_२१]

मुख्य देव कोण काही कळेना | पूजा अर्चनांचा घोळ उकलेना | कशाचा कशासही मेळच बसेना | '**भ्रान्ती**' फारच वाढली समाजात (६.१०)

म्हणोनी मग **शिव, विष्णू, गणेश** | **सूर्य_नारायण** नवग्रह_देवतात प्रमुख | '**देवी**' सर्व '**शक्ती**'ञ्चे सांकेतिक स्वरूप | ऐशी पाचच प्रमुख दैवते मानिली (६.११)

ऐशी '**पञ्चायतन**' दैवतांची 'पूजा' | रूढ जाहली '**सगुण' मूर्ति_पूजे** करिता | '**निर्गुण' साधकां**चे साध्य साधाया | नाना '**योग_मार्ग' व 'क्रिया**' उपनिषदात (६.१२)

बहु जनास आवड 'सगुण' मूर्ति_पूजेची | त्याकरिता साकारल्या **साकेतिक** मूर्ति | पाषाण, वा काष्ठ वा मिश्र_धातुंची | प्रतिमा बनविली **अर्चना** विधीला (६.१३)

कित्येक जन ऐशा प्रतिमान्ना पूजिती | कित्येक अवतार_महिमा गाती | कित्येक स्वदेही अन्तरात्म्यालाच पूजिती | कित्येक **ब्रह्माण्ड_व्याप्त** परमेश्वराला (६.१४)

मूर्ती_प्रतिमा पूजन प्रथम **पायरी** सम | अवतार महिम्न गायन, **पायरी** द्वितीय | अन्तरात्मा_ध्यान समाधी **पायरी** तृतीय | चतुर्थ परमात्मा_स्मरण जो **सर्वव्यापी** (६.१५)

ऐसे हे जाणावे '**चत्वारि_देव**' पूजन | प्रतिमा पूजन व यज्ञयागादिक हे '**कर्म_प्रधान**' | अन्य तीन **भक्ति, भाव व बुद्धि_प्रधान**' | स्वभावानुरूप लभ्य, सर्व साधकान्ना (६.१६)

देव तर अन्तर्यामी सर्वाठायीच | परन्तु जो जो जैसा भजेल त्यास त्यानुरूप | अनुग्रह_प्रचीतीही देतो तो सर्वास | भगवद्गीतेत पहा हे वर्णिले ऐसे (६.१७) [११.२.३३_४०]

ये यथा माम् प्रपद्यन्ते   तान् तथैव भजाम्यहम्   [भगवद्गीता ४.११]

यो यो याम् याम् तनुम् भक्तः   श्रद्धया अर्चितुम् इच्छति |

तस्य तस्य अचलाम् श्रद्धाम्   ताम् एव विदधामि अहम्   [भगवद्गीता ७.२१]

सर्व प्रथम '**प्रपञ्च' करावा नेटका** | अन्तरी धरोनी 'परमार्थ' विवेका | आपुल्या आत्मोद्धारा करिता | मार्ग निवडावा या चारीमधुन एक (६.१६) [११.३.२]

'बाल्यी' सर्वासच आवड क्रीडेची | तारुण्यी धन व 'भोग्य' विषयांची | पोक्त_वार्धक्यी चिन्ता, पुत्र_पौत्रांची | ऐसेच बहु जनांचे सम्पते आयुष्य (६.१७) [११.३.३_८]

आता ऐसे न करावे | बहुतेके विवेके वर्तावे | इहलोक_परलोक सावरावे | दोहीकडे अर्जावे सुख_समाधान (६.१८) [११.३.९_२४]

कर्ममार्ग, उपासना मार्ग | ज्ञान मार्ग, सिद्धान्त मार्ग | प्रवृति_मार्ग, निवृत्ति_मार्ग | जो ज्याकाळी योग्य तो तो निवडावा (६.१९) [११.३.५]

'**ग्राह्य** व **सुसाध्यही**' जे तेच घ्यावे | 'अग्राह्य व असाध्य' ते सर्वथा टाळावे | धार्मिक_अधार्मिक विवेके ओळखावे | प्रत्येक जाणत्या साधकान्नी (६.२०) [११.४.२४]

दुस-याञ्चे अभिष्ट मनोगत जाणावे | त्याञ्चे सुख_दु:ख वाटून घ्यावे | बरे_वाईट दोन्हीही सोसावे | समुदायाचे हितासाठी (६.२१) [११.५.१३_१४]

आप्तांची चुकीची पाठराखणी करणे | दुजियाञ्ची निष्कारणच निन्दा करणे | ही नव्हेत चतुर नेत्याची लक्षणे | न्याय्य व समाज_हित_कारक, रक्षील तोच चतुर (६.२२) [११.५.२५_२६]

लेखके मूल ग्रन्थांचे अध्ययन करावे | **शुद्ध ज्ञान** शोधून वाचून जाणावे | स्वत:ही शुद्ध, नेमस्त लिहावे | मनन चिन्तनी दवडावा बहुतसा काळ (६.२३) [११.६.१_५]

साधू_महन्ताशी करावी चर्चा | न समजले तरच करावे प्रश्ना | व्यर्थ वादंग माजवू नका | स्वबुद्धी_चातुर्य प्रदर्शनासाठी (६.२४)

तोचि गाठावा महन्त बुद्धिवन्त | जो उकलून समजावून दावील 'अर्थ'| प्रबळ शुद्ध पाठान्तर बाळगे स्मृतीत | भाषान्तरही उचितसे करू शके (६.२५) [११.६.६_१०]

राखो जाणे नीती_न्याय | कधीही न करी, न करवी अन्याय | कठिण प्रसंगी योग्यसा 'उपाय' | स्वसामर्थ्ये जो करू जाणे (६.२६) [११.६.१८_१९]

चंचळ नदी नाम एक **गुप्त_गंगा** | स्मरणेच ती पावन करीतसे जगा | तरंग, वळसे, भोवरे, लाटा | खळाळत अधोमुखी चालली ही (६.२७) [११.७.१_८]

उगम स्थानी हिचे जल शुद्ध निर्मल | **आपो_नारायण** स्वरूपच केवळ | परी पुढे वाहता ज्या ज्या संगे मेळ | त्यानुरूप जल होई क्षार, कडू, आदिक (६.२८) [११.७.१२_१८]

कोठे सुगन्धी तर कोठे दुर्गन्धी | कोठे लाल, पिवळे तर कोठे निळे पाणी | जेथे जी संगती त्यानुरूप गुणधर्मही | सद्गुणी, दुर्गुणी, अवगुणी नीर (६.२९)

मानवी स्वभाव व वागणुकीञ्चा खळाळ | आयुनुरूप वळसे, संगतींचा प्रभाव | बहुश: अधोगती दिशेचेच आकर्षण | अति सुन्दर उदाहरण दृश्य नद्यांचे (६.३०)

योग्य, अयोग्य, न्याय्य, अन्याय्य | कार्य, कर्माञ्ची ऐशी करोनी पारख | योग्य_न्याय्य सत्कार्ये, सर्व हितकारक | करावी व इतरास टाळीत जावे (६.३१)

'**मानवी_मूल**' जन्मत: स्वभावे निर्मळ | पुढे जीवनानुभव, शिक्षण व संगत | यांच्याच योगाने घडती **सुष्ट, दुष्ट** | चंचळ मानसिक प्रवृत्ती प्रमाणे (६.३२)

पुनर्जन्माञ्च्या तर सिद्धान्ता प्रमाणे | ही नदी उन्नती कडेही वाहू शके | आत्मोन्नती प्रति_जन्मोजन्मी साधणे | '**सायुज्य_मुक्ती**' हे अन्तिम ध्येय (६.३३)

जागृती, सुषुप्ती व स्वप्नावस्था | सुख_दु:ख भोक्ता व राग_द्वेष कर्ता | या मम देहाच्या संरक्षणा करिता | खाणारा, पीणारा 'आत्मा' जो तोच 'मी' (६.३४)

भूतकाळी जे जे खाद्यान्न मी खाल्ले | त्यातील अणू अणू विणुन शरीर मम बनले | रोज तीन वेळा तरि अन्न मजला हवे | तेणे नित्यच बदलते 'शरीर' ह् माझे (६.३५)
या शरीर रूपी घरट्याच्या आंत | बन्दिशाळेतल्या कैद्या प्रमाणेच | पिन्ज-यात जगणारा पोपट मी एक | हे माझे सत्य स्वरुप '**एक_अन्तरात्मा**' (६.३६)
मम देहाच्या अन्तर्यामीच राहुनी | मी खाल्लेल्या अन्नाच्याच अणू अणू पासुनी | मम शरीराचे संरक्षण करणारी | शक्ती एक याच देही वसते मम समीपच (६.३७)
त्याच दैवी शक्तीच्या मदतीने मी जगतो | तिलाच त्रासकारक असे खातो वा वागतो | ही चूक यापुढे तरी करायला नको | ऐसे समजवावे "**आत्म_निवेदना**"ने (६.३८)
मम पाठ खाजवायला वा थोपटायला | हात दूस-यांचाच लागतो सदैव मला | बाल्यी माय_बापादीन्नी घास भरवले मला | मोबदल्यात मीहि मदत करिन प्राणिमात्रासी (६.३९)
दररोज कुणा तरी आप्त_स्वकीयाची | अथवा शेजा-याची वा कुणा मित्राची | अथवा कुठल्या प्राणिमात्राची तरी | मदत मम हस्ते घडावी रे देवा (६.४०)
ऐशी सदिच्छा मनी धरावी | सिद्धिस्तव देवाची प्रार्थना करावी | बहुसंख्य जन ऐसेच वागतील तरी | सर्व विश्वात वाढेल हो **सुख_समाधान** (६.४१)
नाना देवांच्या नाना प्रतिमान्ना | सद्_**भावे** पूजिती लोक हे नाना | परी मनी धरोनी **फल_आकांक्षा** नाना | समजोनि घ्या मनोगते गप्पाशप्पातुनी (६.४२)
जरी आपुल्या हातोनि काही | त्यांच्या मनोगत कार्यसिद्धीसाठी | मदत जी जी असेल होण्यासारखी | तरी ती ती करावी अविलम्बेसी (६.४३)
तुमच्या रूपाने देवच धाविन्नला | ऐसे समजुनी तो त्याच्याच देवाला | भजेल अधिकच हा लाभ समजावा | समाजी आस्तिकांची वाढेल संख्या (६.४४)
प्रथम त्याने माझी करावी विनवणी | देईल तो जरी मज, काही मोबदल्यातही | तरीच मग मीही करीन काहीतरी | ऐसा **व्यवहारिक_हिशोबी** विचार त्यागावा (६.४५)
हे सर्व विचार जाणावे '**राजसिक**' | लाभास्तवच यांच्या कार्यान्चा पुरुषार्थ | यानेच वाढतेय आज समाजात | लाच_लुचपत व स्वार्थबुद्धी (६.४६)
याच्या याच्या कामना पूर्ण न व्हाव्या | झाल्याच काहीशा तरी त्या आता बिघडाव्या | याच्या रडवेल्या चेह-याची मजा | लुटावया मला महदानन्द (६.४७)
हे असले सर्व विचार 'आसुरी_**तामसिक**' | या विचारान्नीहि घडे हो महापातक | समाजात वाढे अशान्ती व दु:ख | दुराचार, हिंसा, भाण्डण_तंटे (६.४८)
हे विश्व व येथील अखिल सृष्टी | सजीव निर्जीव चराचर आकृती | जन्मती जगती मरती नष्ट होती | पुन: पुन: एका **काल_चक्रा**नुसार (६.४९)
जोवरी आयुष्यात सुख दु:खाभास | तोवरी सर्वान्नाच लाभावे सौख्य | त्यासाठी करिती चिन्तन व प्रयत्न | ते सर्वच सात्विक, **साधू_सन्त** जाणावे (६.५०)
मलाही सात्विक_बुद्धि दे रे देवा | साधु_सन्तांच्या सत्कार्यी वाटा मम असावा | ऐशी प्रार्थना प्रार्थुनीया देवा | कार्यरत व्हावे **निष्काम्य** बुद्धिने (६.५१)
"जाणे कोठे असे ?" ते न सांगती कधी | सांगितलेच कधी तरीही तेथे न जाती | अचानकच प्रगटती वा बेपत्ता होती | महन्ताची वागणुक ऐशीच **अतर्क्य** (६.५२) [११.१०.१०_१६]
सन्त महन्तान्ना आवडतो '**एकान्त**' | म्हणोनि त्यांचे वागणे त्यानुरूप | परन्तू समस्त जगद्हितार्थ | अविरत चिन्तन व कार्यरत असती ते (६.५३)

(मूळ दासबोध दशक १२ : "विवेक_वैराग्य "

बहिर्मुख जगी वावरताना | सात्विक सज्जनांच्याच सगतीत रहा ना | प्रत्येकाचा अधिकार व कुवत जाणोनिया | योग्य कार्यी सहभाग त्यांचा घ्यावा (६.५४)

ज्याने प्रपंच सांडोनि परमार्थ केला | त्याला पुरेसे अन्नही न मिळे खावया | म्हणोनी प्रपंची राखोनि सावधानता | परमार्थ साधती सर्व **विवेकी_सज्जन** (६.५५) [१२.१.२_९]

सौख्यात खबरदार सावधान चित्तता | दु:खात बेखबरशी सहनशीलता | शक्य तो कोणाचेही मनही न तोडिता | राहती विवेकी विमल सन्त_सज्जन (६.५६) [१२.१.१३_१८]

बरे खावे, प्यावे, नेसावे | हे मुख्य_मनोगत जनांचे ओळखावे | चन्दनाप्रमाणे आपण झिजावे | सामाजिक हित व सौख्य रक्षणार्थ (६.५७) [१२.२.३_१७]

जनतेतच **'जनार्दन', देव** ओळखावा | राजी राखावे जनता_जनार्दना | खळ_दुर्जनान्ना शक्यतो टाळोनिया | वर्तावे प्रसंगानुरूप विवेके (६.५८) [१२.२.२०_२८]

आपुली शक्ती, अधिकार, सामर्थ्य | ओळखोनि आपापल्या क्षमतेनुरूपच | प्रपंच राखोनि करिती परमार्थ | ते **देवभक्त विवेकी** धन्य धन्य (६.५९) [१२.३.६_२९]

दु:ख_शोके आदळ_आपटी करोनी | त्रागा केल्याने न सुटका त्यापासुनी | संगीत_नाटक वा रसाळ हरिकीर्तनी | रमता मनी उपजे विवेक_वैराग्य (६.६०) [१२.४.२_१५]

"**विवेक_वैराग्य**" ज्यांचे ज्यांचे मनी | ते सर्व दु:खार्णवी जाती तरोनी | सुख_दु:ख_शोकादिकावरी ताबा ठेवोनी | साक्षीत्व भावनेने ते, पाहती ही नाटके (६.६१) [१२.४.१६_२०]

'मन' दगडासम कठिण करुनी | राहू शके या जगती, विरळा कोणी कोणी | तैसेच रहावे इतर सर्वान्नीही | ऐसा अभिप्राय नाही येथे (६.६२)

यश, कार्य_सिद्धि आदिक सुवेळा | **अवश्य सुखाचा अनुभव घ्यावा** | परन्तू भुरळून भरकटून जाऊ नका | एवढाच उपदेश मुख्यत: यात (६.६३)

वेद_शास्त्रादि वाङ्मयी वर्णिली 'तत्त्वे' | नाना तर्कसंगत भाषादिकानुरूपे | मुख्य तत्त्व त्यातले, **'दृश्य_चंचळ'** असे | ते ते अशाश्वत म्हणुनि **'माया'** स्वरूप (६.६४) [१२.५.१०_१५]

माया_विश्व निर्माता जो तो जगदीश्वर | तो **'विमल_ब्रह्म'** स्वरुप, शाश्वत व निश्चळ | सर्व प्राणिमात्र गण त्याचाच अंश | ऐसे **'आत्म_निवेदन' सतत** चालूच ठेवावे (६.६५) [१२.५.१५_२०]

आपापल्या जीवनावश्यक गरजा | चोरी, लबाडी, लुबाडी न करिता | अवश्य भागवाव्या **आवश्यक तेवढ्या** | स्वकष्टाने उचित व न्याय्य मार्गे (६.६६)

लोभी हावरटपणे मात्सर्ये | गरजेहुन अधिक वा बिन गरजेचे | मिळवून साठवून वाया घालवणे | ऐशी विषय वासना त्याज्य ती त्यागावी (६.६७) [१२.७.२७_३१]

प्रत्येक घटनेस वा घटनाक्रमाला | अनुकूल व योग्यसा कालखण्ड हवा | हा प्राकृतिक नियम पाळावा | इप्सित ध्येय व कार्यसिद्धीसाठी (६.६८) [१२.८]

जागणे, झोपणे, खाणे, पीणे | गाणे, नाचणे, शिकणे, शिकवणे | काम करणे वा विश्रान्ती घेणे | व्यायाम अथवा योगसाधना (६.६९)
ऐशा प्रत्येक कार्यासाठी | **योग्यशा_काळा**ची निवड करायला हवी | ऋतू, वयोमान, वातावरणादिकाशी | आरोग्यासही अनुकूलशी असावी ही निवड (६.७०) [१२.८.१२_१७]

सामाजिक व वैश्विक सुख समृद्धीसाठी | **आळस झाडोनिया कार्यरत असती |** स्व_**जीवन सार्थक** करण्यासाठी | ते परोपकारी सन्त धन्य धन्य (६.७१ [१२.१०.१_४३]

इति श्रीसमर्थ_रामदास विरचित दासबोध ग्रन्थात् मथित "सन्क्षिप्त भावार्थ_दासबोधामृत"सारे

" भीम तथा विवेक_वैराग्य " नाम षष्ठोऽध्याय:

ॐ तत्सत् ब्रह्मार्पणमस्तु | जय जय रघुवीर समर्थ !